अंधेरा होते ही ऑटोमेटिक चालू होगी लाइट और खुलेंगे पर्दे

एसएटीआई के छात्र-छात्राओं के प्रोजेक्ट को देश में पहला पहला स्थान

भास्कर संवाददाता | विदिशा

आने वाले समय में स्टेशन, बस स्टैंड और सार्वजनिक स्थानों पर ऑटोमेटिक चलने वाला डस्टबिन नजर आ सकते हैं। कचरे फेंकने वाले के पास डस्टबिन आएगा। इससे स्वच्छता को बढ़ावा मिलेगा। ऐसा प्रोजेक्ट एसएटीआई के छात्र-छात्राओं ने बनाया है। इस प्रोजेक्ट को छात्र विश्वामित्र अवार्ड 2017 मिला है। छात्र-छात्राओं ने इस प्रोजेक्ट को डिजिटल कैंपस नाम दिया है। इसमें 10 गैजेट्स हैं जो आने वाले समय में लोगों की जिंदगी आसान बनाएंगे। इसके अलावा अंधेरा होते ही कैंपस की लाइट ऑटोमेटिक जलेगी। साथ ही कार्यक्रमों में पर्दे भी रिमोट से खुलेंगे। इस प्रोजेक्ट पर ईसीआई के सचिव सदस्य डॉ. पीआर स्वरूप, आरजीपीवी के कुलपति डॉ.

सुनीलकुमार गुप्ता और संचालक डॉ जेएस चौहान ने छात्र-छात्राओं की प्रशंसा की। टीम को 5100 रुपए नगद भी दिए गए।

टीम के कपिल सोनी, दीपा मर्सकोले, प्रियंका चौकसे और रिया रावत ने विभागाध्यक्ष प्रो. सुधीर फुलम्बीकर के मार्गदर्शन में यह प्रोजेक्ट किया था। खासबात यह है कि सात दिन में इस प्रोजेक्ट को तैयार किया गया था। एआईसीटीई नई दिल्ली को 956 प्रोजेक्ट प्राप्त हुए थे जिसमें से मात्र 55 प्रोजेक्ट को बुलाया गया था। आखिर में इस प्रोजेक्ट को प्रथम पुरस्कार मिला। गुरुवार को संस्था के स्मार्ट क्लास रूम में टीम के छात्र-छात्राओं एवं उनके गाइड को सम्मानित किया गया।

एसएटीआई को सौगात...

बनेगा देश का पहला टीएलटी सेंटर

ईसीआई-आरजीपीवी करेंगे सहयोग

इंटर्नशिप का भी एग्रीमेंट हुआ

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

विदिशा. एसएटीआई में देश का पहला ट्रेनिंग लैस टेक्नॉलॉजी सेंटर खोला जाएगा। अंडरग्राउंड पद्धति से होने वाले कार्यों के लिए इस सेंटर में इंजीनियरिंग विद्यार्थियों को प्रशिक्षण मिलेगा। इंजीनियरिंग काउंसलिंग ऑफ इंडिया (ईसीआई) और आरजीपीवी की मदद से यह सेंटर खोलने का फैसला हुआ है।

एसएटीआई में आए ईसीआई के सचिव डॉ. पीआर स्वरूप और आरजीपीवी के कुलपति डॉ. सुनील गुप्ता ने संस्थान के डायरेक्टर डॉ. जेएस चौहान के साथ संयुक्त रूप से प्रेस को इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एसएटीआई में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में यह संस्थान खोलने का निर्णय लिया गया है। इस सेंटर में अंडरग्राउंड तरीके से कार्य करने की तकनीक सिखाई जाएगी। खासकर अंडरग्राउंड केबल सिस्टम, वाटर लाइन सिस्टम, सीवर लाइन सिस्टम और यहां तक कि अंडरग्राउंड मार्केट भी विकसित करने की तकनीक से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाएगा। इसमें सिर्फ एसएटीआई ही नहीं, बल्कि अन्य इंजीनियरिंग संस्थानों के विद्यार्थी भी प्रशिक्षण हासिल कर सकेंगे। इस दौरान ईसीआई और एसएटीआई के बीच एक महत्वपूर्ण एमओयू पर हस्ताक्षर हुए। इसके तहत अब हर साल एसएटीआई के करीब 540 विद्यार्थियों को ईसीआई देश की विभिन्न इंडस्ट्रीज में इंटर्नशिप कराकर विधिवत ट्रेनिंग उपलब्ध कराएगी। ईसीआई से ऐसा अनुबंध करने वाला एसएटीआई प्रदेश का पहला इंजीनियरिंग कॉलेज है।

अनुबंध... ईसीआई और एसएटीआई के बीच इंटर्नशिप के लिए विशेष अनुबंध साइन किया गया।

ईसीआई सचिव डॉ. स्वरूप ने बताया कि इस इंटर्नशिप में इंजीनियरिंग के साथ मैनेजमेंट के विद्यार्थियों के लिए भी आवश्यक होगी। एसएटीआई डायरेक्टर डॉ. चौहान ने बताया कि संस्थान के 540 छात्रों को इसी सत्र से यह इटर्नशिप कराई जाएगी। आरजीपीवी के कुलपति डॉ. गुप्ता ने बताया कि आरजीपीवी भी ईसीआई से यह अनुबंध करने वाला है। इसका लाभ प्रदेश के करीब 170 इंजीनियरिंग कॉलेजों के करीब 30 हजार विद्यार्थियों को हर साल मिल सकेगा। डॉ. गुप्ता ने कहा कि इस इंटर्नशिप से छात्रों को इंजीनियरिंग का व्यवहारिक ज्ञान दिया जाएगा। इसका उद्देश्य भविष्य की चुनौतियों के लिए अच्छे इंजीनियर्स तैयार करना है।

प्रोजेक्ट का डेमो दिया

इधर, दिल्ली से पहला पुरस्कार जीतकर लौटे कपिल सोनी, प्रियंका चौकसे, दीपा मर्सकोले और रिया रावत ने अपने प्रोजेक्ट का डेमो दिया। उन्होंने सात दिन में करीब 12 हजार रुपए में ये स्मार्ट कैम्पस प्रोजेक्ट तैयार किया है। इसमें ऐसा सिस्टम बना है, जिससे पानी व्यर्थ नहीं बहेगा। ओवरफ्लो होते ही मोटर स्वतः बंद हो जाएगी। वाटर लेवल मोटर से कम होते ही मोटर स्वतः बंद हो जाएगी। ऑटोमेटिक गार्डनिंग सिस्टम के जरिए पौधों को स्वतः पानी मिलेगा। जीएसएम फायर अलर्ट सिस्टम से कैम्पस में कहीं भी आग लगने पर धुंआ उठते ही फायरब्रिगेड सहित संबंधितों को एसएमएस पहुंचेगा। इसी तरह की कई खूबियों वाले इस प्रोजेक्ट पर अतिथियों ने उनका सम्मान किया।

डेमो... देश में पहला पुरस्कार जीतने वाली टीम प्रोजेक्ट का डेमो देती हुई।